अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ऑनलाईन शिक्षा का बढ़ता क्षेत्र एवं भारत में ऑनलाईन शिक्षा के विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण

प्राप्तिः 31.05.2026
स्वीकृतः 17.06.2026

40

राम कृपाल
शोधार्थी (समाजशास्त्र विभाग)
कृपा राम जनता इण्टर कॉलेज,
सरूरपुर खुर्द, मेरठ, उ0प्र0
ईमेलः *ramkripal.meerut@gmail.com*

प्रो0 (डॉ) सुजाता मैनवाल
(समाजशास्त्र विभाग)
मेरठ कॉलेज
मेरठ उ0प्र0

सारांश

कोरोना महामारी के समय मार्च–2019 से वर्ष 2020–21 तक ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव बढ़ा और इसका प्रभाव लोगों में आकर्षण का केन्द्र बना। नई तकनीकों के संगम, इण्टरनेट, कम्प्यूटर तथा मोबाईल का समाज में बढ़ते प्रयोग से भारत की अर्थव्यस्था का डिजिटाइजेशन हुआ, जिससे लोगों को प्रतीत हुआ कि कोरोना महामारी के कारण विद्यार्थियों की शिक्षा–दिक्षा की होने वाले नुकसान को कुछ सीमा तक बचाया जा सकता है? कोरोना काल में गूगल मीट, जूम मीटिंग और माइक्रोसॉफ्ट प्लेटफॉर्म, वॉट्सएप ग्रुप कॉल आदि विभिन्न कम्पनीयों के विकसित किए गए अन्य कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर और मोबाईल एप्प ऑनलाईन शिक्षा के माध्यम बने।

परन्तु ग्रामीण क्षेत्र और शहरी गरीब विद्यार्थियों के शिक्षा का नुकासान ज्यों का त्यों बना ही रहा। बल्कि इण्टरनेट डाटा की मांग और आपूर्ति में किसी भी प्रकार के सामाजिक ताना–बाना अथवा प्रति व्यक्ति आय अथवा राज्य शिक्षा परिषद, केन्द्रीय शिक्षा परिषद या भारतीय विद्यालय प्रमाण पत्र परीक्षा परिषद, अन्य विदेशी बोर्ड और विद्यालयी डिजिटल व्यवस्था बनाने के लिए ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था एवं आधारिक संरचना को ध्यान में रखकर ऑनलाईन शिक्षा हेतु किसी प्रकार की नीति नहीं बनाई गई और ना ही बजटीय व्यवस्था किया गया, जिससे समाज के आम और गरीब विद्यार्थियों को लाभ मिले और इन छात्रों के लिए सहज हो सके। आज ''ऑनलाईन सब कुछ है परन्तु सब कुछ में शिक्षा का भविष्य क्या है?''

ऑनलाईन शिक्षा के कारण समाज में बढ़ने से सामाजिक शैक्षणिक खाई बढ़ रही है? अथवा सामाजिक शैक्षणिक खाई को मिटाने में सहयोग कर रही है? और ऑनलाईन शिक्षा का बढ़ता दायरा और शिक्षा में इसकी गुणवत्ता क्या है? समाज को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है? यह शोध पत्र विस्तृत अध्ययन कर इनके उत्तर जानने की प्रयत्न करेगा। प्रश्नगत समस्या यह है कि शिक्षा का निजीकरण और व्यावसायीकरण किस प्रकार से ऑनलाईन शिक्षा को सफलता प्रदान करने में सहयोग प्रदान करेंगें?

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.040

मुख्य शब्द

ऑनलाईन शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा फ्लिप्ड शिक्षा, मिश्रित ब्लेण्डेडे शिक्षा, पत्राचार शिक्षा समकालिक शिक्षा/अतुल्यकालिक शिक्षा शिक्षण प्रबंधन प्रणालियां।

प्रस्तावना

सूचना प्रौद्योगिकी और इसकी सार्वव्यापकता, हमारे जीवन के लगभग सभी पहलूओ को प्रभावित कर रही है। ई–विकास अथवा ई–क्रान्ति (2018) ने ई–मेल, ई–कामर्स, ई–सरकार और अब ई–शिक्षा को जन्म दिया है। ऑनलाईन शिक्षा हमारे शिक्षा और अधिगम के आदतों को बदल रही है। शिक्षा वितरण मॉडल में परिवर्तन, तीव्र और परिवर्तनकारी रहे हैं। एक अत्यन्त गतिशील शिक्षण परिदृष्य ने शोधकर्ताओं, शिक्षकों, प्रशासकों, नीति निर्माताओं, प्रकाशकों और व्यवसायियों के बीच अत्यधिक रूचि पैदा की है। भारत में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) की स्थापना 1985 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। इग्नू देश भर में दूरस्थ शिक्षा के लिए मानकों को बढ़ावा देने, समन्यव करने और पाठ्यक्रम निर्धारित करने और उसे लागू करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। ई–शिक्षा ऑनलाईन चर्चा, डिजिटल मंचों का विकास, चैट रूम और वीडियों कॉन्फ्रेंसिंग तक के पहुँच के साथ–साथ अतुल्यकालिक और समकालिक शिक्षा वितरण विधियों की सुविधा प्रदान करती है। आज की ''ऑनलाईन'' या ''मिश्रित'' शिक्षा 1990 के दशक में इण्टरनेट और वर्ल्ड वाइड वेब (डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू) के आगमन के साथ शुरू हुई और दूर–दराज के इलाकों में रहने वाले लोगों तक पहुँचती है, जो यात्रा के समय को कम करने की सुविधा चाहते हैं।

डिजुबन, पिकियानो, ग्राहम और मोस्कल (2016) मुख्य रुप से अमेरिकी संदर्भ का उपयोग करते हुए चार चरणों में ऑनलाईन शिक्षा के विकास का वर्णन करते हैं।

1990 का दशक (इण्टरनेट द्वारा संचालित दूरस्थ शिक्षा) 2000–2007 (शिक्षण प्रबंधन प्रणालियों एल.एम.एस. का बढ़ता उपयोग), 2018–2012 (मैसिव ओपन ऑनलाईन कोर्सेस एम.ओ.ओ. सी. का विकास) और उसके बाद ऑनलाईन उच्च शिक्षा में नामांकन की वृद्धि पारम्परिक उच्च शिक्षा में नामाकंन की वृद्धि परम्परिक उच्च शिक्षा में नामांकन से आगे निकाल गई।

यह शोध पत्र कई कारणों से समायिक और महत्वपूर्ण दोनों है। पहला, यह ऑनलाईन व्यावसायिक शिक्षा के विश्लेषण पर केन्द्रित है। दूसरा यह वर्ष 2000 से अबतक की अवधि को कवर करता है। तीसरा, चूँकि हमारा जोर व्यावसायिक शिक्षा पर है, इसलिए हमने कई व्यावसायिक पत्रिकाओं के लेखों का विश्लेषण किया है। जो मुख्यतः ऑनलाईन शिक्षा पर केन्द्रित है। चौथा यह एक वैश्विक अध्ययन है और दुनिया के पांच क्षेत्रों–उत्तरी अमेरिका, यूरोप दक्षिण अमेरिका, एशिया, एशिया–प्रशान्त और अफ्रिका में व्यावसायिक क्षेत्र में ऑनलाईन शिक्षा की स्थिति का एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

हम दुनिया के विभिन्न हिस्सों में ऑनलाईन शिक्षा की स्थिति का विश्लेषण करने के लिए पल्विया कुमार, कुमार और कुमार (2017) द्वारा प्रस्तुत समग्र मॉडल का उपयोग करते हैं, यह समग्र मॉडल वैश्विक; देश, स्ंस्थगत; पाठ्यक्रम/कार्यक्रम और छात्र, अध्यापक, प्राध्यापक, पाठ्यक्रम और प्रौद्योगिकी अंतःक्रियाओं के सूक्ष्म–स्तरीय कारकों को रेखांकित करता है।

इस शोध पत्र में, हम उन देश पर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो ऑनलाईन शिक्षा की सफलता को निर्धारित कर सकते है। इन देशों की जनसंख्या लगभग 1.6 अरब है, इसके अलावा हमने दुनिया में ऑनलाईन/मिश्रित शिक्षा के आन्दोलन की समझ विकसित करने के लिए ऑस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रिका और चीन तथा मध्यपूर्व क्षेत्र को भी कवर किया है। जहाँ तक सम्भव हो हमने प्रत्येक देश के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति, चुनौतियों और भविष्य की सम्भावनाओं को शामिल किया है।

ऑनलाईन शिक्षा का विकास

संयुक्त राज्य अमेरिका में दुरस्थ शिक्षा पिछली तीन शताब्दियों में विकसित होकर ''ऑनलाईन शिक्षा'' के रूप में विकसित हुई। जो उस समय उपलब्ध प्रमुख वितरण प्रणालियों जैसे डाक प्रणाली, रेडियो और टेलीविजिन, और इण्टरेक्टिव तकनीकों के माध्यम से हुई (एण्डरसन और ड्रोन–2011; केण्टनर–2015) 1728 में बोस्टन गजट में एक विज्ञापन प्रकाशित हुआ था जिसमें लिखा था ''देश में जो इस कला को सीखना चाहते हैं उन्हें साप्ताहिक कई पाठ भेजे जाएंगे, और वे बोस्टन में रहने वालों की तरह ही पूरी तरी से प्रशिक्षित हो सकते हैं'' इसमें कालेब फिलिप्स ने पूरे देश में पत्रों के आदान–प्रदान से छात्रों को शार्ट हैण्ड सिखाने का प्रस्ताव रखा। (जेन्सलर–2014) आज के शिक्षकों की तरह ही उन्होनें भी दावा किया कि शिक्षा का स्तर पारम्परिक आमने–सामने की शिक्षा जितना ही अच्छा होगा। रेडियो और टेलीविजन पाठ्यक्रम वितरण प्रणाली पार्सल पोस्ट के बाद आई। जिसमें सन् 1919 में विस्कॉन्सिन विश्वविद्यालय के प्रोफेसर द्वारा संघीय लाइसेन्स प्राप्त रेडियो स्टेशन की शुरुआत की गई तथा सन् 1950 के दशक में विश्वविद्यालयों ने टेलीविजन स्टेशनों के साथ मिलकर क्रेडिट के लिए पाठ्यक्रम प्रदान किए।

फिनिक्स विश्वविद्यालय जो पूर्णतः ऑनलाईन कार्यक्रमों के लिए प्रसिद्ध है ने 1989 में कम्प्यूसर्व (पहला ऑनलाईन सेवा प्रदाता) और फिर 1991 में वर्ल्ड वाईड वेब के साथ मिलकर ऑनलाईन तकनीक का उपयोग की शुरुआत किया। वर्ष 1998 में ऑनलाईन कार्यक्रमों में वृद्धि की शुरुआत हुई, जब न्यूयार्क विश्वविद्यालय ने एन.वाई.यू का अनावरण किया जो बाद में आए कई अन्य ऑनलाईन कायक्रमों को साथ–साथ चल नहीं पाए। ऑनलाईन कायक्रमों की अपेक्षाओं को पूरा करने के लिए इस प्रारम्भिक विफलता ने ''मिश्रित'' या हाइब्रिड'' कार्यक्रमों की अवधारणा को भी जन्म दिया जो 1999–2000 में सामने आए और क्लासरूम को ऑनलाईन कक्षाओं के साथ मिला दिया गया ताकि दोनों का समन्यव किया जा सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका

संयुक्त राज्य अमेंरिका में ऑनलाईन नामांकन लगातार 14वें वर्ष वृद्धि हुई है। अर्थव्यवस्था का विस्तार हुआ हो चाहे संकुचन और कुल कालेज नामांकन में गिरावट हुआ हो या वृद्धि। साथ ही निजी परिसरों में आमने सामने कक्षाएं लेने वाले छात्रों की संख्या में गिरावट आई है (सीमैन एलन और सीमैन–2018)।

2016 में अमेरिका में 60 लाख से ज्यादा छात्रों कम से कम एक ऑनलाईन पाठ्यक्रम में दाखिला लिया था। (लेडर मैन 2018) और कम से कम एक ऑनलाईन पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों का अनुपात बढ़कर 30 प्रतिशत से ज्यादा हो गया है। सार्वजनिक और गैर–लाभकार संस्थानों में ऑनलाईन कक्षाएं लेने वाले छात्रों का प्रतिशत ज्यादा है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.040

अगले पांच वर्षों में ऑनलाईन स्नातक और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में निरन्तर वृद्धि की सम्भावना दिखाई दे रही है। कम से कम एक ऑनलाईन कक्षा लेने वाले आधे से अधिक छात्रों ने कैम्पस में भी एक कोर्स किया और अमेरिका में शारीरिक रूप से उपस्थित न होने वाले छात्रों ने अमेरिकी ऑनलाईन डिग्री कार्यकर्मों में भाग लिया जो ऑनलाईन कक्षाएं लेने वाले सभी छात्र मात्र एक प्रतिशत थे। अमेरिका के भीतर और बाहर दूर–दराज से आने वाले छात्रों की संख्या में निरन्तर वृद्धि विश्वविद्यालयों के लिए एक चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है।

(पॉपोविच और नील, 2005)। सबसे पहले अमेरिका में कॉलेज नामाकंन में लगातार गिरावट आई जो 2011 में 20.6 मिलियन से 2016 में 19 मिलियन हो गया। (हिल्ड्रेथ–2017) और 2020 के अंत में इसके और गिरावट होने ही उम्मीद है। (हूवर–2017) कॉलेज नामांकन के कारणों में शामिल है–

1. कॉलेज एवं विश्वविद्यालय शिक्षा की बढ़ती लागत।
2. समय पर डिग्री पूरा करने की दरों में गिरावट।
3. आवागमन की बढ़ती लागत।
4. शिक्षा के लिए दिर्घकालिक ऋण लेने की अनिच्छा।

विभिन्न शोंधों से पता चलता है कि 25 वर्ष से अधिक आयु के ऑनलाईन शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ेंगी। (हूवर–2017) का सुझाव है कि ऐसी समस्या के समाधान में रचनात्मक सोच शामिल होना चाहिए। जैसे अंतर्राष्ट्रीय छात्रों की संख्या बढ़ाने के लिए शैक्षिक कार्यक्रमों की खोज, ऑनलाईन या मिश्रित पाठ्यक्रमों को लागू करना होगा, जो छात्रों को शैक्षणिक संस्थानों में आने–जाने की लागत और छात्रों के यात्रा हेतु समय को कम करने में मदद कर सकते हैं।

संस्थागत कारक जैसे ऑनलाईन शिक्षण और ऑनलाईन सीखने की शैलियों की समझ की कमी, ऑनलाईन शिक्षा और कार्यक्रम के विपणन हेतु प्रशासनिक समर्थन की कमी नामाकिंत छात्रों की संख्या, संकाय योग्यता, ट्यूशन दरें और कार्यक्रम की अवधि (केंटनर–2015) भी कार्यक्रम को विफलता की ओर ले जा सकते हैं। छात्रों की वाजिब चिन्ताओं में सहपाठियों और प्रोफेसरों से अलगाव, नई तकनीकि और सॉफ्टवेयर में महारत हासिल करने की चिंता, नियोक्ताओं द्वारा ऑनलाईन डिग्रियों के प्रति नाकारात्मक धारणा की सम्भावना और पारम्परिक आमने–सामने की कक्षाओं में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रमों तुलना में शिक्षा में गुणवत्ता में गिरावट की सम्भावना शामिल है।

भारत

जैसा कि के0जी0एम0पी0 इण्डिया और गूगल ने उल्लेख किया है कि भारत जैसे विकासशील देश संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे उन्नत देशों द्वारा पहले अपनाए गए गलत माडलों को नजरअन्दाज किए जाने से और हाइब्रिड मॉडल, नए और ऑफबीट विषयों को जोड़ने, गेमिफिकेशन, पीयर–टू–पीयर लर्निंग और प्रोफाईल मैपिंग जैसी नवीनतम प्रगति का लाभ उठाने के लिए बेहतर स्थिति में के0जी0एम0पी0 इण्डिया और गूगल के अनुासार भारत में ऑनलाईन/मिश्रित शिक्षा के प्रमुख चालकों में शामिल हैं और कार्यरत पेशेवरों और नौकरी चाहने वालों द्वारा सतत शिक्षा की बढ़ती मांग प्रमुख है।

डिजिटल इण्डिया और स्कील इण्डिया, भारत में डिजिटल साक्षरता और बेटी बचाओ–बेटी पढ़ाओ के प्रसार के लिए शुरू की गई सरकारी पहलों में से एक उदाहरण है। ऐसे की कुछ उदाहरण है जैसे ई–बस्ता (इसमें स्कूलों की किताबों का डिजिटल स्वरूप किया गया हैं), ई–एजुकेशन (सभी स्कूलों को ब्राडबैंड और मूफ्त वाई–फाई से जोड़ कर शिक्षा को बढ़ावा देना है।), पायलट एम0ओ0ओ0सी0 (मैसिव ऑनलाईन ओपन कोर्स) का विकास, नन्द घर (शिक्षण सहायक सामाग्री के रूप में डिजिटल उपकरण) एस0 डब्ल्यू0ए0वाई0ए0एम0 (स्वम्) कक्षा–9 से स्नातकोत्तर तक की कक्षाओं में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम पर आधारित (एम0ओ0ओ0सी0), स्कील इण्डिया (ऑनलाईन कौशल प्रशिक्षण के लिए शिक्षण पोर्टल)।

सुभाष गेरिया (2025) भारत में युवा आबादी (15–29 वर्ष) में मोबाइल फोन का उपयोग अत्यधिक है। जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में 96.8 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 97.6 प्रतिशत लोगों ने पिछले तीन माह में प्रयोग किया। सांख्यिकी मंत्रालय के सर्वे से पता चलता है कि इसक अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में 14–18 वर्ष की आयु के बच्चों के पास अपने घर में स्मार्ट फोन है जो शिक्षा की स्थिति रिर्पोट (ए.एस.ई.आर.) के अनुसार सोशल मिडिया का उपयोग करते है।

अपराजिता (2025) के अनुसार जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलेपमेण्ट एण्ड कैपेबिलिटी में स्टडी प्रकाशित हुई है। जिसमें 18–24 वर्ष की उम्र के एक लाख से ज्यादा बच्चों से सवालों के माध्यम से पता लगाया गया। अध्ययन में सम्मिलित किए गए यंग एडल्ट से मेण्टल हेल्थ से जुड़े सवालों को पुछा गया। जैसे अक्रमकता (एग्रेशन) महसूस होना, सबसे अलग–थलग महसूस होना, मतिभ्रम महसूस होना अर्थात जो आवाज या वस्तुएं दिखाई नहीं दे पही हैं उसे भी महसूस करना, बात–बात पर आत्महत्या का विचार मन में आना आदि। इस अध्ययन में अचम्भित करने वाले तथ्य यह भी पाया गया कि जिन बच्चों को कम उम्र में स्मार्ट फोन दिया गया उनमें से 13 वर्ष की उम्र से पहले ऐसे बच्चों का दिमागी स्वास्थ्य खराब होती जा रही है।

एशिया और मध्य पूर्व

चीन में लियू (2009) ने शैक्षणिक मनोविज्ञानिक, सामाजिक और तकनीकी दृष्टिकोणों पर आधारित पाठ्यक्रम डिजाइन की खोज की और पाया कि यह अधिक लचीला और उपयोगी है। एक घटना–चित्रण अध्ययन (झाओ मैककोनेल और जियांग–2009) ने व्याख्यान की केन्द्रीयता ऑनलाईन सहयोगात्मक शिक्षण, छात्र शिक्षण, नेटवर्क शिक्षण और चीनी उच्च शिक्षा ई–लर्निंग में बुनियादी ढाँचा और पहुँच के रूप में पाँच वैचारिक श्रेणियों का प्रस्ताव रखा।

मिर्जा और अब्दुलकरीम (2011) ने मध्य पूर्व में ई–लर्निंग की चुनौतियों को कम इण्टरनेट पहूँच, ऑनलाईन शिक्षण के प्रति कम सार्वजनिक सम्मान और अरबी भाषा में।

ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड

ग्रीनलैण्ड–2011 ने ऑनलाईन शिक्षा के प्रति वैश्विक रूझानों को प्रतिबिम्बित करते हुए पाते है कि (2000–2011) के दौरान ऑस्ट्रेलिया और एशिया प्रशान्त क्षेत्र में ओपन एक्सेस ऑनलाईन शिक्षा में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई। ऑस्ट्रेलिया के ऑनलाईन तृतीयक शिक्षा में अग्रणी, स्वाइनबर्न यूनिवर्सीटी ऑफ टेक्नालॉजी (एस0यू0टी0) ने ऑनलाईन शिक्षा परिदृश्य में राष्ट्रीय विकास और

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.040

ऑस्ट्रेलिया के कई ऑनलाईन शिक्षा प्रदाताओं के अनुभव को प्रतिम्बित किया (ग्रीनलैण्ड और मूर–2014)। ओपन एक्सेस ऑनलाईन शिक्षा में एस0यू0टी0 की वृद्धि ओपन यूनिवर्सिटीज ऑस्ट्रेलिया (ओ0यू0ए0) के साथ साझेदारी में हासिल की गई थी जो ''ऑनलाईन उच्च शिक्षा में एक राष्ट्रीय नेता'' है (ओ0यू0ए0–2011)। ओ0यू0ए0 कई ऑस्ट्रेलियाई अग्रणी विश्वविद्यालयों के साथ एक सहयोगी उद्यम है। जिसमें एस0यू0टी0 एक शेयरधारक और प्रदाता भागीदार है (ग्रीनलैण्ड और मूर–2014) इसके लिए आम तौर पर ऑफलाइन और ऑनलाईन तेजी से समन्यवय स्थापित करने की व्यवस्था की आवश्यकता होगी। ताकि अंतिम उपयोगकर्ता के लिए सीखने की सर्वोत्तम गुणवत्ता सुनिश्चित किया जा सके। स्मिर्नोवा–ट्राइबुल्स्का एट एल0 (2016) द्वारा ऑस्ट्रेलिया में एम0ओ0ओ0सी0 (मैसिव ऑनलाईन ओपन कोर्स) की लोकप्रियता और अपनाने के लिए पहचाने गए करको में शामिल है।

राइट (2010) द्वारा न्यूजीलैण्ड के शिक्षा मंत्रालय को प्रस्तुत एक प्रतिवेदन में पाया गया कि ई–लर्निंग न्यूजीलैण्ड के तकनीकी रूप से समृद्ध सन्दर्भ में सहकर्मी और सहयोगात्मक शिक्षण के लिए एक शक्तिशाली उपकरण है और उम्मीद है कि इससे भविष्य में बेहतर छात्र–शिक्षक सम्बंध बनेंगे।

अफ्रीका

दक्षिण अफ्रीका में ई–नीति का पड़ताल करते हुए वांडेयार (2015) का तर्क है कि जिला और प्रान्तीय अधिकारियों जैसे मध्यस्थों द्वारा नीति की समझ में अंतराल हैं, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय ई–शिक्षा नीति के वास्तविक कार्यावान्यन में कई समस्याएं आ रहीं है। लेखकों का तर्क है कि शैक्षणिक प्रमाण पत्रों की ऑनलाईन उपलब्धता ने श्रमिक वर्ग को अपनी नौकरी छोड़े बिना अपने कौशलें सुधार करने में मदद की है, हॉलाकि ऑनलाईन शिक्षा की समग्र धारणा अभी भी बहुत सकारात्मक नहीं है। कोटुआ (2015)। अफ्रीका भर में आई0सी0टी0 क्षमता का आंकलन करने के उद्देश्य के किए गए एक अन्य हालिया अध्ययन मे मुल्हांगा बौर लीमा (2018) ने सामान्य रूप से अफ्रीका और विशेष रूप से मोजाम्बिक में मौजूदा तकनीकी और वैज्ञानिक पारिस्थिकी प्रणलियों का विश्लेषण किया।

यह लेख राष्ट्रीय अनुसंधान एवं शिक्षा नेटवर्क (जो कई देशों में वैज्ञानिक अनुसंधान और ई–लर्निंग दोनों का आधार है) बढ़ावा देने के लिए एक सेवा मॉडल का प्रस्ताव करता हैं। पोर्टर और अन्य (2016) द्वारा किए गए एक असाधारण अध्ययन में तर्क दिया गया कि अधिकांश अफ्रीकी छात्र अपने मोबाइल पर इण्टरनेट और शैक्षिक सम्बंधित सामाग्री का उपयोग कर सकते हैं।

यह अध्ययन घाना, दक्षिण अफ्रीका और माली में मोबाइल ई–शिक्षा के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की तुलना करता है। हालाँकि मोबाइल आधारित शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्तर की और बढ़ रही है और इसका व्यापक प्रभाव छात्रों पर पड़ सकता है। जेसिया, नेहेमिया और अर्नेस्ट (2015) इसे आगे बढ़ाते हुए कहते है कि बेहतर परिणामों के लिए ई–लर्निंग प्रणाली तैयार करने से पहले सांस्कृतिक और स्थानीय मुद्दों को समझने की भूमिका पर जोर देते हैं।

राज्य, राष्ट्र और विश्व संगठनों के लिए निष्कर्ष और निहितार्थ

यह शोध–पत्र दुनिया के पाँच क्षेत्रों जैसे उत्तरी अमेरीका, यूरोप, दक्षिण अमेरीका, एशिया, एशिया–प्रशान्त और अफ्रीका में ऑनलाईन शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों और रूझानों को प्रस्तुत करता है।

एशिया के एक विकासशील अर्थव्यवस्था भारत ने अनौपचारिक रूप से 2008 में ही ऑनलाईन शिक्षा का अनुभव किया। मध्यपूर्व के देश ऑनलाईन शिक्षा के अनुयायी देर से रहे हैं। पिछले शोधों से पता चलता है कि इण्टरनेट की कम पहूँच, ऑनलाईन डिग्रीयों के प्रति लोगों का कम सम्मान और अरबी भाषा में ऑनलाईन शैक्षणिक सामाग्रीयों की कमी मध्यपूर्व के देशों में ऑनलाईन शिक्षा के विकास की मुख्य बाधाएं हैं। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्ड ऑनलाईन शिक्षा को कार्यालयों में कार्यरत् सहकर्मीयों ने सहयोगात्मक शिक्षा का एक सशक्त माध्यम माना है और ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड तकनीकी रूप से समृद्ध होने के कारण यहाँ पर ऑनलाईन शिक्षा कार्यक्रम की लोकप्रियता बढ़ रही है। अफ्रीकी देशों में घाना, दक्षिण अफ्रीका और माली ऑनलाईन शिक्षा को बढ़ावा देने देने वाली सरकारी नीतियों के समर्थन से महाद्विप में ऑनलाईन शिक्षा आन्दोलन का नेतृत्व कर रहे हैं।

ऑनलाईन शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जाना चाहिए। इसे कक्षाओं में पढ़ाने जैसी परम्परा के समान माना जाना चाहिए। इससे ऑनलाईन शिक्षा को पारम्परिक शिक्षा के जैसी मान्यता मिलेगी। अतः शिक्षा के किसी भी माध्यम में मिले प्रमाण–पत्र एक–दूसरे से अलग पहचान नही होना चाहिए।

अंततः ऑनलाईन शिक्षा का वैश्विकरण होना तय है, जैसे हमने ई–मेल, ई–गर्वनेन्स का वैश्विकरण देखा है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और विश्व व्यापार संगठन जैसी वैश्विक संगठन को पाठ्यक्रम, प्रमाणन, छात्र चयन और शिक्षण प्रबंधन प्रणालियों में सार्थक मानक स्थापित करने के इस प्रयास में शामिल होना होगा। यह शोधपत्र विभिन्न स्वरूपों में ऑनलाईन शिक्षा जैसे नए शिक्षा के तरीकों के प्रति खुलेपन की आवश्कता पर बल देता है। इसके पिछे तर्क यह है कि शिक्षा का यही भविष्य है।

संदर्भ

1. Alavi, M., & Leidner, D. E. (2001). Review: Knowledge management and knowledge management systems: Conceptual foundations and research issues. *MIS Quarterly*, 25(1), Pg. **107–136**. doi:10.2307/3250961
2. Anderson, T., & Dron, J. (2011). Three generations of distance education pedagogy. *The International Review of Research in Open and Distributed Learning*, 12(3), Pg. **80–97**.
3. Bansal, S. (2017). How India's ed-tech sector can grow and the challenges it must overcome. VC Circle. https://www.vccircle.com/the-present-and-future-of-indias-online-education-industry
4. EDITED BY: **SUBHASH GARIYA**UPDATED: FRI, 30 MAY 2025 08:27 AM (IST) https://www.jagran.com/technology/tech-news-smartphone-penetration-in-india-survey-reveals-high-usage-rates-23950993.html
5. https://www.livehindustan.com/lifestyle/health/having-smartphones-ruin-mental-health-of-your-kids-you-should-know-which-age-ideal-to-use-social-media-201753420671823.html
6. Dziuban, C., Picciano, A. G., Graham, C. R., & Moskal, P. D. (2016). *Conducting research in online and blended learning environments: New pedagogical frontiers*. New York: Routledge, Taylor & Francis Group.

7. Gensler, L. (2014, February). From correspondence courses to MOOCs: The highlights of distance learning over the ages. *Forbes*, 12, 2014.
8. Greenland, S. J., & Moore, C. (2014). Patterns of student enrolment and attrition in Australian open access online education: A preliminary case study. *Open Praxis*, 6(1), Pg. **45–54**. doi:10.5944/openpraxis.6.1.95
9. Hildreth, B. (2017). U.S. Colleges are facing a demographic and existential crisis. Huffington Post. 6/26/17, updated 7/5/17.
10. Hillier, M. (2018). Bridging the digital divide with off-line e-learning. *Distance Education*, 39(1), Pg. **110–112**. doi:10.1080/01587919.2017.1418627
11. Hoover, E. (2017, December). Demographic changes as destiny in college admissions? It's complicated. *The Chronicle of Higher Education*, 14, 2017.
12. Jaffer, S., Ng'ambi, D., & Czerniewicz, L. (2007). The role of ICTs in higher education in South Africa: One strategy for addressing teaching and learning challenges. *International Journal of Education and Development Using ICT [Online]*, 3(4).http://ijedict.dec.uwi.edu/viewarticle.php?id=421
13. Joshua, C. E., Nehemiah, M., & Ernest, M. (2015). A conceptual culture-oriented e-learning system development framework (e-LSDF): A case of higher education institutions in South Africa. *International Journal of Trade, Economics and Finance*, 6(5), Pg. **229–265**. doi:10.18178/ijtef.2015.6.5.47
14. Kentnor, H. E. (2015). Distance education and the evolution of online learning in the United States; curriculum and teaching dialogue. *Information Age Publishing, Charlotte*, 17(1/2), Pg. **21–34**.
15. Kotouaa, S., Ilkana, M., & Kilicb, H. (2015). The growing of online education in sub-Saharan Africa: Case study Ghana. *Procedia - Social and Behavioral Sciences*, 191, Pg. **2406–2411**. doi:10.1016/j.sbspro.2015.04.670
16. KPMG & Google (2017). Online Education in India: 2021. https://assets.kpmg.com/content/dam/kpmg/in/pdf/2017/05/Online-Education-in-India-2021.pdf(open in a new window)
17. Lederman, D. (2018). Who is studying online (and Where): Inside higher Ed, https://www.insidehighered.com/digital-learning/article/2018/01/05/new-us-data-show-continued-growth-college-students-studying(open in a new window)
18. Liu, M. (2009). The design of a web-based course for self-directed learning. *Campus-Wide Information System*, 26(2), Pg. **122–131**. doi:10.1108/10650740910946846

19. Mirza, A. A., & Al-Abdulkareem, M. (2011). Models of e-learning adopted in the Middle East. *Applied Computing and Informatics*, 9(2), Pg. **83–93**. doi:10.1016/j.aci.2011.05.001
20. Mulhanga, M. M., & Lima, S. R. (2018). Building sustainable NRENs in Africa - A technological and e-education perspective. In Á. Rocha, H. Adeli, L. P. Reis, & S. Costanzo (Eds)., *Trends and advances in information systems and technologies. World CIST'18 2018. Advances in intelligent systems and computing*, Naples, Italy (Pg. **745**). Cham: Springer.
21. Open Universities Australia (OUA). (2013). About Us. Retrieved October 15, 2013, from http://www.open.edu.au/about-us/
22. Palvia, S., Kumar, A., Kumar, O., & Kumar, S. (2017). Exploring themes, trends, and frameworks: A meta-analysis of online business education research. In: AMCIS 2017 conference, MA, Boston, August 10- 12, 2017.
23. Porter, G., Hampshire, K., Milner, J., Munthali, A., Robson, E., De Lannoy, A., … Abane, A. (2016). Mobile phones and education in sub-Saharan Africa: From youth practice to public policy. *Journal of International Development*, 28, Pg. **22–39.** doi:10.1002/jid.v28.1
24. Seaman, J. E., Allen, I. E., & Seaman, J. (2018). *Grade increase: Tracking distance education in the United States*. Wellesley: The Babson Survey Research Group, MA, USA.
25. Smyrnova-Trybulska, E., Ogrodzka-Mazur, E., Szafrańska-Gajdzica, A., Morze, N., Makhachashvili, R., Noskova, T., … Issa, T., (2016). MOOCs – Theoretical and practical aspects: Comparison of selected research results: Poland, Russia, Ukraine, and Australia. In: International Conferences ITS, ICEduTech and STE 2016, Dec 6-8, Melbourne, Australia, edited by: Piet Kommers, TomayessIssa, Theodora Issa, Elspeth McKay, Pedro Isaías, Associate Editor: Luís Rodrigues, ISBN: 978-989-8533-58-6, Pg. **107–114**.
26. Vandeyar, T. (2015). Policy intermediaries and the reform of e Education in South Africa. *British Journal of Educational Technology*, 46(2), Pg. **344–359**. doi:10.1111/bjet.12130
27. Wright, N., (2010). e-Learning and implications for New Zealand schools: A literature review. Report to the Ministry of Education. Retrieved May 2, 2018, from http://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.617.4373&rep=rep1&type=pdf
28. Zhao, J., McConnel, D., & Jiang, Y. (2009). Teachers conceptions of e-learning in Chinese higher education: A phenomenographic analysis. *Campus-Wide Information System*, 26(2), Pg. **90–97**. doi:10.1108/10650740910946800